Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

चन्द्र प्रकाश यादव
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 1
Page Number : 55-62

Publication Issue :
January-February-2021

Article History
Accepted : 16 Jan 2021
Published : 30 Jan 2021

सारांश – अध्ययन के रूप में वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का अलग–अलग अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या के रूप में प्रतापगढ़ जनपद में स्थित समस्त वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के लिए चयनित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् 200 विद्यार्थियों जिनमें से 100 वित्तपोषित एवं 100 स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों सेयादृच्छिक ढंग से चयनित किया गया है। इस परीक्षण का निर्माण एवं मानकीकरण डॉ. जगदीश, मनोविज्ञान विभाग, आर.बी.एस. कालेज, आगरा एवं डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के द्वारा निर्मित किया गया है। यह 13 वर्ष से 22 वर्ष की आयु के छात्र एवं छात्राओं के लिए निर्मित किया गया है। उक्त मापन के लिए 56 प्रश्नों को 6 वर्गों में विभाजित किया गया है जो निम्नांकित है– सकारात्मक आत्म मूल्यांकन, वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), सामूहिक

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

गतिविधियों में भागीदारी एवं वातावरणीय समायोजन तथा समायोजन से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने हेतु डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु पियर्सन आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि– वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं उनके आयाम आत्म मूल्यांकन, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), वातावरणीय समायोजन में सकारात्मक एवं एवं सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है जबकि समायोजन का वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता एवं सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है। स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं आयामा आत्म मूल्यांकन, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), वातावरणीय समायोजन, वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता, सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी में सकारात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

की–वर्ड– वित्तपोषित, स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य, विद्यार्थी, सहसम्बन्ध

प्रस्तावना– प्रस्तुत अध्ययन शैक्षिक रूप से अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान में मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्या भारत में ही नहीं वरन् विश्व के अनेक देशों में एक गम्भीर समस्या के रूप में उभरकर सामने आ रही है। वर्तमान में तीव्र गति से हुए वैज्ञानिक प्रगति और औद्योगीकरण के फलस्वरूप लोगों की जीवन शैली अनियमित और अस्त–व्यस्त हो गयी है, जिससे वे शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ होने के साथ ही मानसिक रूप से भी अनेक व्याधियों से ग्रसित होते जा रहे हैं। अतः वर्तमान में शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देने के साथ ही मानसिक स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यन देने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। विशेषकर किशोर बालकों के लिए इसकी महती आवश्यकता महसूस की जा रही है। इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन अपनी महत्ता को स्वयं दर्शाता है।

अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी को इसलिए शामिल किया गया है क्योंकि इस स्तर के बालक किशोरावस्था के होते हैं। चूँकि किशोरावस्था के अन्तर्गत 12 वर्ष से 18 वर्ष तक की आयु के बालक आते हैं और इस अवस्था के बालक सांवेगिक रूप से अस्थिर माने जाते हैं। इस समय बालकों के मानसिक,

सामाजिक, संवेगात्मक स्तरों में तीव्र गति के साथ परिवर्तन होते रहते हैं तथा इनके मन में ढेर सारी जिज्ञासायें जन्म लेती रहती हैं।

इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **स्टेनले हॉल** का विचार है कि **"किशोरावस्था प्रबल दबाव, तनाव, तूफान एवं संघर्ष की अवस्था है।"** फलस्वरूप उचित निर्देशन एवं परामर्श न मिल पाने के कारण मानसिक रूप से भटकाव की स्थिति बन जाती है जो कि मानसिक अस्वस्थता का कारण बनती है। प्रस्तुत अध्ययन ऐसे बालकों को चिन्हित कर उनका समुचित मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

प्रस्तुत अध्ययन चाहे वह अध्यापक, अभिभावक या समाज का कोई भी व्यक्ति हो, सभी के लिए आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। एक अध्यापक को अपने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। क्योंकि इसके अभाव में वे बालकों की शिक्षा सम्बन्धी समस्या का निराकरण नहीं कर पायेंगे और उन बालकों का शैक्षिक समायोजन सम्भव नहीं हो पायेगा। यह शेध अध्ययन एक अध्यापक को अपने बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को जानकर उनका उचित मार्गदर्शन कैसे किया जाये, इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

अभिभावकों तथा माता–पिता को यदि मानसिक स्वास्थ्य का ज्ञान है तो वे अपने बालकों को समायोजित करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। वे बालकों को मानसिक रोगी होने से बचा सकते हैं। समाज का ढाँचा बहुत जटिल बनता जा रहा है। व्यक्ति की आवश्यकतायें पूर्ण नहीं हो पाती हैं जिसके कारण जीवन में द्वन्द और विफलतायें बढ़ती जा रही हैं। ये मानसिक सन्तुलन पर बुरा प्रभाव डालती हैं। यदि हम चाहते है कि आज के मानव का मानसिक स्वास्थ्य बना रहे और वे अपना जीवन ठीक प्रकार से व्यतीत करें तो यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को मानसिक स्वास्थ्य का ज्ञान हो।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त विकसित है। आजकल इनका उपयोग सेना तथा विभिन्न उद्योगों में भी किया जाता है। भारत में अभी तक कोई ऐसा देशव्यापी सर्वेक्षण नहीं हुआ है जिसके द्वारा मानसिक रोगों की प्रतिशतता का पता लगाया जा सके।

व्यक्ति का स्वास्थ्य उसकी सबसे बड़ी पूँजी है। मानसिक स्वास्थ्य का शारीरिक स्वास्थ्य से काफी अधिक महत्त्व है, क्योंकि इसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व के सभी पक्षों शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा सौन्दर्यात्मक गुणों के पूर्ण और सन्तुलित विकास पर ध्यान दिया जाता है।

अच्छा मानसिक स्वास्थ्य उचित एवं सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होता है। यह हमें ऐसे व्यक्ति के निर्माण में सहायक होता है जो सभी परिस्थितियों में सन्तुलित एवं संयमित व्यवहार का प्रदर्शन कर सके तथा जो अपनी स्वयं की आवश्यकताओं और सामाजिक उत्तरदायित्वों के बीच उचित तालमेल बना सके।

मानसिक स्वास्थ्य उचित शारीरिक स्वास्थ्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है। बालक की शारीरिक क्षमताओं और उनकी शारीरिक वृद्धि एवं विकास में उनके अच्छे मानसिक स्वास्थ्य से बहुत सहायता मिलती है। चिन्ता–तनाव, कुण्ठा, मनोविकार एवं मनोग्रन्थियों से मुक्त होना अच्छे स्वास्थ्य का परिचायक है।

मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के नैतिक उत्थान में पर्याप्त सहयोग प्रदान कर सकता है। बौद्धिक शक्तियों से ठीक ढंग से कार्य करने, भावनाओं और संवेगों पर उचित नियंत्रण करने तथा सामाजिक मूल्य मान्यताओं तथा सम्बन्धों की उचित परवाह करने के कारण ऐसा व्यक्ति स्वतः ही नैतिक मानदण्डों पर खरा उतरता हैं।

इसके अतिरिक्त क्या बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालय तथा भौतिक वातावरण के साथ–साथ समायोजन आदि कारक प्रभावित करते हैं। इन सब प्रश्नों का सही उत्तर पाने की जिज्ञासा से ही अध्ययनकर्त्ता ने इस विषय पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की।

समस्या कथन–

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य

1. वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध–प्रविधि

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या के रूप में प्रतापगढ़ जनपद में स्थित समस्त वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को लिया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के लिए चयनित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् 200 विद्यार्थियों जिनमें से 100 वित्तपोषित एवं 100 स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों सेयादृच्छिक ढंग से चयनित किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

इस परीक्षण का निर्माण एवं मानकीकरण डॉ. जगदीश, मनोविज्ञान विभाग, आर.बी.एस. कालेज, आगरा एवं डॉ. ए.के. श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के द्वारा निर्मित किया गया है। यह 13 वर्ष से 22 वर्ष की आयु के छात्र एवं छात्राओं के लिए निर्मित किया गया है। उक्त मापन के लिए 56 प्रश्नों को 6 वर्गों में विभाजित किया गया है जो निम्नांकित है–

क्र.सं.	क्षेत्रों का नाम	प्रश्नों की संख्या
1.	सकारात्मक आत्म मूल्यांकन	10
2.	वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता	08
3.	समग्र व्यक्तित्व	12
4.	स्वशासन (स्वायत्तता)	06
5.	सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी	10
6.	वातावरणीय समायोजन	10
	सम्पूर्ण अनुसूची विश्वसनीयता योग	56

समायोजन से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने हेतु डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण–

अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु पियर्सन आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

सारणी संख्या–1

वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध

क्र0सं0	मानसिक सामाजिक की विमाएँ	सहसम्बन्ध गुणांक r (N=100)
1	सकारात्मक आत्म मूल्यांकन	0.368*
2	वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता	0.149
3	समग्र व्यक्तित्व	0.400*

4	स्वशासन (स्वायत्तता)	0.394*
5	सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी	0.129
6	वातावरणीय समायोजन	0.343*
7	सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य	0.509*

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके आत्म मूल्यांकन, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), वातावरणीय समायोजन एवं सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.368, 0.400, 0.394, 0.343 एवं 0.509 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में कमी या वृद्धि का उनके आत्म मूल्यांकन, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), वातावरणीय समायोजन एवं सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में कमी या वृद्धि होगी जबकि वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता एवं सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.149 एवं 0.129 है जो .05 स्तर पर असार्थक है अतः वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में कमी या वृद्धि का उनके वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता एवं सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी में कमी या वृद्धि से संबंध नहीं है।

1. स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

सारणी संख्या–2

स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध

क्र0सं0	**मानसिक सामाजिक की विमाएँ**	**सहसम्बन्ध गुणांक** r (N=100)
1	सकारात्मक आत्म मूल्यांकन	0.418*
2	वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता	0.475*
3	समग्र व्यक्तित्व	0.584*
4	स्वशासन (स्वायत्तता)	0.435*
5	सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी	0.474*

6	वातावरणीय समायोजन	0.659*
7	सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य	0.751*

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके आत्म मूल्यांकन, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), वातावरणीय समायोजन, वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता, सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी एवं सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.418, 0.475, 0.584, 0.435, 0.474, 0.659 एवं 0.751 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन में कमी या वृद्धि का उनके आत्म मूल्यांकन, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), वातावरणीय समायोजन, वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता, सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी एवं सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में कमी या वृद्धि से सम्बन्ध है।

निष्कर्ष–

- वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं उनके आयाम आत्म मूल्यांकन, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), वातावरणीय समायोजन में सकारात्मक एवं एवं सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है जबकि समायोजन का वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता एवं सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी के मध्य कोई सहसम्बन्ध नहीं है।
- स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य एवं आयामा आत्म मूल्यांकन, समग्र व्यक्तित्व, स्वशासन (स्वायत्तता), वातावरणीय समायोजन, वास्तविकता को ग्रहण करने की क्षमता, सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी में सकारात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययनोपरान्त पाया गया कि चाहे वह वित्तपोषित के विद्यार्थी हो या स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी, उनके समायोजन क्षमता का उनके मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक सहसम्बन्ध है। पूर्व अध्ययन में श्रीवास एवं कुमार (2016) ने अध्ययनोपरान्त इंगित किया कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के अत्यधिक उच्च स्तर को निर्धारित करने में पाँचों आयामों में अधिक से कम की ओर क्रमशः स्वायत्ता, समाजिक परिपक्वता, खुश रहना, संवेगात्मक स्थायित्व तथा यथार्थवादी का योगदान है। निष्कर्षतः छात्रों के मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहने में सर्वाधिक योगदान खुश रहना है तथा दूसरा योगदान यथार्थवादी होना है। **पाण्डे तथा दुबे (2017)** ने अध्ययनोपरान्त पाया कि छात्रों में पारिवारिक वातावरण की विमा हार्दिकता, सहानुभूति, संसजकता, प्रजातांत्रिक,

अभिविन्यास, उत्साह, तनाव, संस्कृति दीक्षा, प्रतियोगिता, द्वेषभाव, पुरस्कार आदि पारिवारिक वातावरण से सार्थक रूप से सहसम्बन्धित हैं। जबकि छात्राओं में पारिवारिक वातावरण की विमा उत्साह, तनाव, प्रतियोगित व प्रजातांत्रिक अभिविन्यास का मानसिक स्वास्थ्य से सार्थक सहसम्बन्ध देखा गया।

अध्ययनकर्त्ता द्वारा प्राप्त अध्ययनों के समान अध्ययन **जैन, निशा (2014)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– छात्राओं में तनाव छात्रों की अपेक्षा उच्च है तथा विद्यार्थियों के तनाव का उनके समायोजन के मध्य ऋणात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है। अतः जिन विद्यार्थियों में तनाव, कुण्ठा, चिन्ता, अवसाद एवं समस्याएँ अधिक होती है उनकी समायोजन क्षमता निम्न होती है। ऐसे में समायोजन क्षमता में वृद्धि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि का एक महत्त्वपूर्ण चर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैन, निशा (2014). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के तनाव व समायोजन में सम्बन्ध का अध्ययन, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल फॉर मल्टीडिस्पिलनरी स्टडीज, वॉल्यूम–1, इश्शू–2, पृ0 1–4
2. फ्रैंकी, दीपा एवं चामुण्डेश्वरी, एस. (2014). साइको–सोशल कोरिलेट्स ऑफ ऐकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ कैरेन्ट रिसर्च एण्ड ऐकेडमिक रिव्यू, वाल्यूम–2, नं0 2, पृ0 148–158
3. सिंह, निर्मला (2016). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आत्मसिद्धि एवं समायोजन का विश्लेषण, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्युमिनिट्ज एण्ड सोशल साइंसेस, वॉ0 4, इश्शू–6, पृ0 52–57
4. श्रीवास्तव एवं गुप्ता (2016). शिक्षित–अशिक्षित परिवारों का विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, एस.आर.एस.डी. मेमोरियल शिक्षा शोध संस्थान, आगरा, इण्डिया, वॉल्यूम–1, इश्शू–1, पृ0 32–34
5. जैन, पारस (2017). ए स्टडी ऑफ कोरिलेशन बिटविन एडजेस्टमेण्ट एण्ड एकेडमिक एचिवमेण्ट, आई–जर्नल्स : इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल रिलिवेन्स एण्ड कर्न्सन, वॉल्यूम–5, इश्शू–6, पृ0 14–17।
6. मनीकन्दन एवं सेलवराजू (2017). एडजेस्टमेण्ट बिहैवियर एण्ड एकेडमिक एचिवमेण्ट ऑफ हायर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स – लोकल्टी ऑफ स्कूल वाइज एनॉलसिस, पैरीपेक्स–इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वॉल्यूम–6, इश्शू–11, पृ0 525–526